Subject :— Sociology Date :— 20/05/2020
Class :— D-I (H) & XIth Paper :— Ist & Subsidiary ①
Topic :— संस्कृति तथा इसके तत्व व विशेषता

By :— Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga

संस्कृति

Online Study Material No :— (83)

समाजशास्त्र में संस्कृति का अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण सम्पत्ति उसकी संस्कृति है, जो उसे दूसरे प्राणी-विशेष से अलग करती है। इसलिए यह कहा जाता है कि मानव से यदि उसकी संस्कृति छीन ली जाय तो उसके पास जो कुछ शेष बचेगा वह एक मनुष्य नही बल्कि एक प्रकार का बन्दर होगा।

इसकी चर्चा करते हुये प्रसिद्ध मानवशास्त्री हाबेल ने संस्कृति को एक अनोखी मानव की रचना कहा है। इसका कारण है कि किसी भी व्यक्ति किसी समूह अथवा किसी एक व्यक्ति को अन्य सभी व्यक्तियों से, एक समूह को अन्य सभी समूह से और एक समाज को दूसरे समाजों से पृथक करती है, क्योंकि सांस्कृतिक विशेषताएँ प्रत्येक व्यक्ति समूह और समाज के भिन्न-भिन्न होते हैं। किसी एक समूह को अन्य सभी समूह से और एक समाज को दूसरे समाजों से पृथक करती है क्योंकि सांस्कृतिक विशेषताएँ प्रत्येक व्यक्ति समूह और समाज के भिन्न-भिन्न होते हैं। किसी एक समूह की नजर से दूसरे समूह की संस्कृति को हीन समझा जा सकता है। लेकिन ऐसा सोचना गलत है, क्योंकि संस्कृति अच्छी और बुरी नही होती है। उदाहरण के लिए आज भी भारतवर्ष में बहुत से ऐसे लोग है जो अपने को सांस्कृतिक दृष्टि से पश्चिमी लोगों से श्रेष्ठ समझते है तथा पश्चिमी संस्कृति को नीची दृष्टि से देखते हैं। लेकिन हम भारतवासियों का यह सोचना निरर्थक और गलत है।

समाजशास्त्रियों ने संस्कृति की परिभाषा अपने-अपने ढंग से दी है। सर्वप्रथम अंग्रेज मानवशास्त्री व समाजशास्त्री E. B. Tylor ने 1871 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Primitive Culture' में संस्कृति की धारणा प्रस्तुत की है। हर्ष कोविट्स के अनुसार "संस्कृति मानव व्यवहार का सीखा हुआ भाग है।"

MacIver & Page के अनुसार, "हमारे रहने, विचार करने, प्रतिदिन की कार्य-कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन और आनंद में संस्कृति हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।"

इस परिभाषा में मैकाइवर ने इस तथ्य पर अधिक जोर दिया है कि संस्कृति और व्यक्तित्व घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner

तथा संस्कृति वह शक्तिशाली इकाई है जिसकी अवहेलना करके व्यक्ति कठिनता से ही कोई कार्य कर सकता है, चाहे यह किसी क्षेत्र से सम्बन्धित क्यों न हो।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम यह निष्कर्ष दे सकते हैं कि संस्कृति भौतिक और अभौतिक तत्वों की वह जटिल सम्पूर्णता है, जिसे व्यक्ति का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है तथा जिसमें वह अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

संस्कृति के तत्व

वीरस्टीड के अनुसार संस्कृति के तीन तत्व है :-

1. विचार (Ideas) → हर समाज में कुछ न कुछ विचार अवश्य ही पाये जाते हैं। इन विचारों के लिए यह आवश्यक नहीं की सभी विचार सही हो। हर समाज में अलग-अलग प्रकार के विचार होते हैं जो दूसरे समाज की दृष्टि से गलत भी हो सकते हैं। एक समाज में कितने विचार हो सकते हैं, इसका ज्ञान असंभव है। हर समाज के रहन-सहन का ढंग भी इन विचारों पर आधारित होता है। इन विचारों को संस्कृति का भाग कहा जाता है।
2. व्यवहार आदर्श (Norms) → समाज में शान्ति एवं संगठन बनाये रखने के लिए कुछ व्यवहार आदर्श होते हैं, जो कि प्रत्येक व्यक्ति को मानने पड़ते हैं। इस व्यवहार आदर्शों पर ही व्यक्ति को सभी कार्य करने पड़ते हैं, क्योंकि व्यवहार आदर्शों के बिना सामाजिक जीवन असंभव है। बिना आदर्श व्यवहारों के समाज तथा व्यक्ति पर जीवित रहना असंभव है। समाज स्वयं इस प्रकार का संगठन है जो किस व्यवहार आदर्शों की उपस्थिति पर आधारित है। वास्तव में व्यवहार ही समाज का सार है। व्यवहार आदर्श के अन्दर तीन बाते होती हैं :- (i) नियम (Rules) (ii) उम्मीद (Expectation) तथा (iii) सामाजिक स्वीकृत पद्धतियाँ (Standardized procedures)।
3. भौतिक पदार्थ (Material) → प्रत्येक समाज में अन्य बातों के साथ भौतिक पदार्थ भी होते हैं। यह भौतिक पदार्थ किसी समाज की विशेषताएँ होती हैं। इन भौतिक पदार्थों के अन्दर खान-पान, कपड़े, बर्तन, मोटर, कार्य करने के औजार, उत्पत्ति के साधन होते हैं।

Clark Wissler (क्लार्क विस्लर) ने संस्कृति के निम्नांकित तत्व बताये हैं :-

Scanned with CamScanner

1. भाषा
2. भौतिक गुण - (i) भोजन, (ii) मकान, (iii) आने-जाने का साधन, (iv) हथियार, (v) वर्तन, (vi) वस्त्र आदि।
3. कला - नाच, गाना आदि।
4. धार्मिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान।
5. धार्मिक संस्कार।
6. परिवार समाज सम्बन्धी व्यवस्था।
7. सुम्पत्ति।
8. संस्कार।
9. युद्ध।

संस्कृति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :-

1. **संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है :-** हावेल ने संस्कृति की इस विशेषता को बहुत ही महत्व दिया है। लुण्डवर्ग का कथन है कि "संस्कृति व्यक्ति को जन्मजात प्रवृत्तियों अथवा जैविकीय विरासत से सम्बन्धित नहीं होती, बल्कि एक सामाजिक सीख व अनुभवों पर आधारित है।" इस प्रकार समाज में प्रत्येक अनुभव व प्रत्येक अविष्कार संस्कृति का अंग बन जाता है। यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि हमारे सभी सीखे हुये व्यवहार संस्कृति नहीं होते। हम केवल उन्हीं व्यवहारों को संस्कृति का अंग मानते हैं, जो एक बड़े समूह की विशेषता हो। किसी एक या दो व्यक्तियों का व्यवहार संस्कृति का निर्माण नहीं करता।
2. **संस्कृति गतिशील होती है :-** वास्तव में संस्कृति की प्रवृत्ति गतिशील होती है, इसमें निरंतर रूप से परिवर्तन चलता रहता है। यह व्यक्तियों के कार्यों में सहायक होती है और व्यक्ति इसमें परिवर्तन लाते रहते हैं।
3. **संस्कृति समूह का आदर्श होती है :-** प्रत्येक समूह अपनी संस्कृति को आदर्श मानता है। इसका कारण यह है कि सामूहिक आदर्शों और व्यवहारों के ढंगों से संस्कृति का निर्माण होता है और इन व्यवहारों में समूह के आदर्श नियम घुले रहने के कारण संस्कृति भी उस समूह के लिए आदर्श बन जाती है। व्यक्ति दूसरे समाज की संस्कृति की तुलना में अपनी संस्कृति को कहीं अधिक उच्च और अलौकिक समझते हैं। भारतीय अपनी संस्कृति को ईश्वरीय और पाश्चात संस्कृति को अनैतिक मानते हैं, जबकि पाश्चात देशों के व्यक्ति अपनी संस्कृति को प्रगतिवादी और भारतीय

Scanned with CamScanner

संस्कृति को पिछड़ी हुयी और रुढ़िवादी मानते हैं।

4. प्रत्येक समाज की संस्कृति पृथक होती है :- प्रत्येक समाज की सामाजिक और भौगोलिक दशाऐं भिन्न होने के कारण उसकी संस्कृति भी भिन्न होती है। व्यक्तियों में विचार करने और व्यवहार करने के ढंग में भी भिन्नता होती है जिसके परिणाम स्वरुप अभौतिक पक्ष प्रत्येक समाज में एक-दूसरे से भिन्न देखने को मिलता है।

5. संस्कृति में अनुकूलन का भी गुण है :- प्रत्येक स्थान की सांस्कृतिक विशेषताऐं इस प्रकार की होती है जिसकी सहायता से वहाँ के भौगोलिक और सामाजिक वातावरण को अनुकूल किया जा सकता है। उदाहरणार्थ- टुण्ड्रा अथवा ध्रुव प्रदेश में रहने वाले व्यक्तियों की संस्कृति इस प्रकार की है जिसमें बर्फ और ठण्डे तूफानों के बीच भी रहा जा सकता है, जबकि भारतीय संस्कृति के विभिन्न प्रतिमान (जैसे खान-पान, भोजन-वस्त्र आदि) हमारी भौगोलिक परिस्थितियों से अनुकूलन करने के लिए उपयोगी है।

6. संस्कृति में आवश्यकता-पूर्ति का गुण है :- संस्कृति की प्रत्येक इकाई व्यक्ति की किसी न किसी आवश्यकता को अवश्य पूरा करती है। कभी-कभी संस्कृति का कोई अंग बाहरी रुप से बेकार मालूम पड़ता है, लेकिन सम्पूर्ण सांस्कृतिक ढाँचे में उसका महत्व अवश्य होता है। उदाहरणार्थ - लोहे की एक सामान्य तीली बिल्कुल निरर्थक प्रतीत होती है, लेकिन एक साइकिल की सम्पूर्ण संरचना में इसका महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसी प्रकार धर्म का कोई अकेला तत्व बेकार मालूम पड़ सकता है लेकिन धर्म की सम्पूर्ण संरचना में उसका अवश्य ही महत्वपूर्ण स्थान होगा, नही तो उसका अस्तित्व ही नही रहेगा। जिस प्रकार शरीर का छोटा से छोटा अंग भी किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति करता है, उसी प्रकार संस्कृति का भी कोई अंग निरर्थक नही होता।

S.N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U

Scanned with CamScanner